व्रत-पर्व

ज्येष्ठ, 2078 वि. सं. 27 मई-24 जून, 2021ई.

1. गणेश चतुर्थी, ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी, आखुरथ चतुर्थी, 29 मई, 2021ई. शनिवार

2. अपरा एकादशी व्रत, ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी, 6 जून, 2021ई. रविवार (सबके लिए)

3. वटसावित्री, ज्येष्ठ अमावस्या, 10 जून, 2021ई. गुरुवार

ज्येष्ठ अमावस्या। महिलाएँ आजीवन सधवा रहे के लिए तथा पति की आयुवृद्धि के लिए यह व्रत करतीं हैं। सावित्री सत्यवान की कथा इसके साथ जुड़ी हुई है। यह मध्याह्नव्यापिनी पर्व है अर्थात् जिस दिन दोपहर में अमावस्या तिथि होती है उसी दिन यह व्रत होगा, अतः इसे चतुर्दशीविद्धा कहा गया है। इसमें दोपहर में किसी बड़गद के वृक्ष के नीचे गौरी की पूजा कर लाल रंग के धागे से पेड़ के चारों और लपेटने का विधान है। मौसम में प्राप्त होने वाला फल भोग लगाया जाता है तथा पंखा डुलाया जाता है। पूजा के बाद महिलाएँ बरगद का पत्ता अपने जूडा में लगाती हैं। इस पूजा के बाद महिलाएँ पारण कर लेतीं हैं। विवाह के प्रथम वर्ष यह पर्व विशेष धूमधाम से मनाया जाता है।

4. रम्भा तृतीया, ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया, पञ्चाग्नि-व्रत, 13 जून, 2021ई., रविवार

पार्वती ने भगवान् शिव को पति के रूप में पाने के लिए चारों और अग्नि जलाकर तथा पाँचवीं अग्नि के रूप में सूर्य को निहारती हुई ग्रीष्मकाल की घोर तपस्या की थी। इसी उपलक्ष्य में यह व्रत किया जाता है।

5. गङ्गा दशहरा, ज्येष्ठ शुक्ल दशमी, 20 जून, 2021ई., रविवार

स्वर्ग से गंगा के अवतरण के उपलक्ष्य में गंगादशहरा का व्रत किया जाता है। इस दिन गंगा में स्नान करने से दस प्रकार के पापों का शमन होता है। एक अन्य उल्लेख के अनुसार इस दिन गंगा का अवतरण दस योग में हुआ था। ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, मंगलवार या बुधवार, हस्त नक्षत्र, व्यतीपात योग, गर करण, आनन्द योग, कन्या राशि में चन्द्रमा एवं वृष राशि में सूर्य- ये दश योग कहे गये हैं। इनमें से योगों की संख्या जिस वर्ष जितनी अधिक होगी, दशहरा का व्रत उतना प्रशस्त माना जायेगा। यदि ज्येष्ठ में मलमास भी हो, फिर भी मलमास में ही दशहरा होती है। निर्णय-सिन्धु में कमलाकर ने इसे दस दिनों तक चलनेवाला पर्व बतलाया है। उनके अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा से गंगा के तट पर गंगा स्तोत्र का वृद्धि पाठ प्रतिपदा के दिन एक बार, द्वितीया के दिन दो बार इत्यादि के क्रम से करना चाहिए। इसप्रकार दशमी के दिन दश बार स्तोत्र का पाठ, षोडशोपचार पूजन आदि करना चाहिए। चावल के पीठा से बने जलीय जीवों का समर्पण भी करना चाहिए। स्तोत्र एवं पाठ की विधि धर्म-सिन्धु में उद्धृत किया गया है।

6. कबीर जयन्ती, ज्येष्ठ पूर्णिमा, 24 जून, 2021ई., गुरुवार

ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन जगद्गुरु रामानन्दाचार्य के शिष्य सन्त कबीर की जयन्ती मनायी जाता है। इस वर्ष परम्परा के अनुसार 623वीं जयन्ती मानी गयी है।

***